अध्याय 22

याजकों से सम्बन्धित नियम (जारी है)

दो-अध्याय वाले भाग के इस दूसरे आधे भाग में, याजकों को विशेष रूप से सम्बोधित किया गया था (22:1, 2, 17, 18; देखें 21:1)। यहोवा ने बलिदानों के याजकीय भाग को खाने और केवल सही प्रकार के पशुओं को बलि किया जाए इसे सुनिश्चित करने के लिए इस सम्बन्ध में निर्देश दिए। इसके बाद उसने इनमें दो विधियाँ और जोड़ दीं जिनका पालन याजकों को बलिदान चढ़ाते समय करना था।

ये नियम पाठकों को आज असंगत प्रतीत हो सकते हैं। हालाँकि, इस बात में कोई संदेह नहीं कि परमेश्वर ने इन्हें इतना महत्वपूर्ण दर्जा दिया क्योंकि उसने इन नियमों के प्रति नौ बार अपनी स्वीकृति बलपूर्वक यह कहते हुए प्रदान की, “मैं यहोवा हूँ” (22:2, 3, 8, 9, 16, 30, 31, 32, 33)। याजकों को इस अध्याय में दिए गए नियमों का पालन इसलिए करना था ताकि यहोवा का पवित्र नाम अपवित्र न ठहरे (22:2, 32)। यदि वे इस संदर्भ में पाई जाने वाली विधियों को पूरा करने में असफल हुए, तो उनका पाप उन्हें मृत्युदण्ड के ख़तरे में डाल देगा (22:9)। उनके लिए परमेश्वर के नियमों का उल्लंघन करने का परिणाम उनके द्वारा उन “पवित्र भेंटों” को अपवित्र ठहराना होगा जिन्हें लोग यहोवा के लिए लाया करते थे; इस प्रकार के अपराध के लिए वे दण्ड के योग्य ठहरेंगे (22:15, 16)। अन्य शब्दों में, जिन बातों को आज का पाठक महत्वहीन समझ सकता है, उन बातों को परमेश्वर ने महत्वपूर्ण समझा! न तो याजक और न ही लोग परमपवित्र परमेश्वर के नाम को इस भाग में दिए गए निर्देशों का उल्लंघन करने के द्वारा अपवित्र ठहराने का जोखिम ले सकते थे।

याजकीय भाग में से खाने हेतु आवश्यक बातें (22:1-16)

पुस्तक में पहले दी गईं विधियों ने यह स्पष्ट कर दिया कि याजकों को उन बलिदानों में से एक भाग मिलने वाला था जिन्हें लोग यहोवा को चढ़ाया करते थे।[1] अध्याय से पहले दो अनुच्छेद (22:1-16) मुख्य तौर से यह वर्णन करते हैं कि याजकीय भागों का उपभोग किस प्रकार और किनके द्वारा किया जाना था।

विधिपूर्ण शुद्धता (22:1-9)

[1]फ़िर यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"हारून और उसके पुत्रों से कह कि इस्राएलियों की पवित्र की हुई वस्तुओं से जिनको वे मेरे लिये पवित्र करते हैं अलग रहें, और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र न करें; मैं यहोवा हूँ। [3]और उनसे कह कि तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में तुम्हारे सारे वंश में से जो कोई अपनी अशुद्धता की दशा में उन पवित्र की हुई वस्तुओं के पास जाए, जिन्हें इस्राएली यहोवा के लिये पवित्र करते हैं, वह प्राणी मेरे सामने से नाश किया जाएगा; मैं यहोवा हूँ। [4]हारून के वंश में से कोई क्यों न हो जो कोढ़ी हो, या उसके प्रमेह हो, वह मनुष्य जब तक शुद्ध न हो जाए तब तक पवित्र की हुई वस्तुओं में से कुछ न खाए। जो लोथ के कारण अशुद्ध हुआ हो, या जिसका वीर्य स्खलित हुआ हो, ऐसे मनुष्य को जो कोई छूए, [5]और जो कोई किसी ऐसे रेंगनेहारे जन्तु को छूए जिससे लोग अशुद्ध हो सकते हैं, या किसी ऐसे मनुष्य को छूए जिसमें किसी प्रकार की अशुद्धता हो जो उसको भी लग सकती है [6]तो वह प्राणी जो इनमें से किसी को छूए साँझ तक अशुद्ध ठहरा रहे, और जब तक जल से स्नान न कर ले तब तक पवित्र वस्तुओं में से कुछ न खाए। [7]तब सूर्य अस्त होने पर वह शुद्ध ठहरेगा; और तब वह पवित्र वस्तुओं में से खा सकेगा, क्योंकि उसका भोजन वही है। [8]जो जानवर अपने आप से मरा हो या पशु से फाड़ा गया हो उसे खाकर वह अपने आप को अशुद्ध न करे; मैं यहोवा हूँ। [9]इसलिये याजक लोग मेरी सौंपी हुई वस्तुओं की रक्षा करें, ऐसा न हो कि वे उनको अपवित्र करके पाप का भार उठाएँ, और इसके कारण मर भी जाएँ; मैं उनका पवित्र करनेवाला यहोवा हूँ।"

यह अध्याय उन निर्देशों के साथ आरम्भ होता है जो एक याजक की विधिपूर्वक शुद्धता के महत्व के विषय में बात करता है। यह केवल तब ही आवश्यक नहीं थी जब वह बलिदान चढ़ाता था, यह उस समय भी आवश्यक थी जब वह और उसका परिवार उसे दिए गए बलिदानों के भाग में से खाया करते थे।

आयतें 1, 2. शब्द यह घोषणा करते हुए आरम्भ होता है कि आगे आने वाले नियमों को किसने दिया था और ये किन्हें दिए गए थे: **यहोवा** ने इन्हें **मूसा** को दिया; और उसे उन्हें याजकों, **हारून और उसके पुत्रों** को सौंपना था।

इसके बाद वाक्यांश याजकों को दिए गए इस प्रकाशन का कारण बताता है। उन्हें उन निर्देशों की आवश्यकता थी जो परमेश्वर मूसा को देने वाला था ताकि वे **इस्राएल के पुत्रों की उन पवित्र भेंटों के प्रति जो उन्होंने यहोवा को चढ़ाईं थीं** सावधान रहना सीखें।

हालाँकि अधिकांश संस्करण NASB के इसका अनुवाद "सावधान रहो में करने से सहमत हैं,"[2] अन्तर्निहित इब्रानी शब्द נָזַר *(नज़ार)* के अर्थ के कारण इस वाक्यांश के प्रति कई प्रश्न उठाए गए हैं। उदाहरण के लिए NJB, इसका अनुवाद "उन्हें निश्चय ही पवित्र भेंटों के द्वारा पवित्र किया जाना चाहिए" में करती है। आर. लेयर्ड हैरिस ने लिखा,

अनुवाद "सम्मान के साथ व्यवहार" (NIV) "स्वयं को अलग करें" (KJV) या "दूर रहो" (RSV) की तुलना में सन्दर्भ अधिक सटीक बैठता है। यह (*नज़ार*) क्रिया है जिससे शब्द "नाज़ीर" निकला है। एक नाज़ीर कुछ वस्तुओं से केवल दूर ही नहीं रहता था, बल्कि वह स्वयं को उन वस्तुओं के विषय में पवित्र भी रखता था। शब्द *नेज़ेर* का दोहरा अर्थ "अलग किया गया" और "पवित्र किया गया" गया है। विलियम होलाड़े ... कहते हैं कि उपसर्ग *'मीन'* के साथ इसका अर्थ "भय के साथ व्यवहार करना" है।

दोहरा अर्थ स्वभाविक है, क्योंकि एक नाज़ीर स्वयं को पाप और अशुद्धता से दूर रखता था और स्वयं को यहोवा के लिए पवित्र किया करता था। आयत 2 में, हालाँकि, ऐसा प्रतीत होता है याजकों को स्वयं को बलिदानों से अलग नहीं करना था - जो, अन्ततः, उन्हें चढ़ाने थे - बल्कि उन्हें उन बलिदानों को पवित्र करना था, और उनके साथ सम्मान का व्यवहार करना था। जैसा कि निम्नलिखित आयतें व्याख्या करती हैं, एक याजक पवित्र वस्तुओं को उस समय भी दूषण से दूर रखना था जब उसमें स्वयं कुछ अशुद्धता थी।[3]

याजकों को यहोवा को समर्पित किए गए बलिदानों के प्रति "सावधान रहना" था ताकि उसका **पवित्र नाम अपवित्र** न ठहरे। "अपवित्र" (חָלַל, *चलाल)* का अर्थ है पवित्र की बजाए साधारण वस्तु या सामान्य वस्तु के समान व्यवहार करना। किसी को भी परमेश्वर के नाम के साथ इस प्रकार का व्यवहार नहीं करना था मानों वह साधारण या सामान्य हो; और याजकों को उसकी पवित्रता की रक्षा करने का विशेष कर्तव्य सौंपा गया था।

आयत 3. यह आयत अगली छः आयतों के लिए विषय वाक्य का कार्य करती है। इसके बाद आने वाली आयतों में याजकों को सम्बोधित किया गया था, जो हारून के चिरस्थायी **वंशज** (शाब्दिक तौर पर, "बीज") थे। इस नियम का स्पष्टता से वर्णन किया गया है। जिन याजकों की **पहुँच**[4] **पवित्र भेंटों** तक थी - जो कि, वे भेंटे हैं जो इस्राएलियों के द्वारा पवित्र परमेश्वर के लिए उसके पवित्र निवास स्थान में लाईं गई थीं - उन्हें निश्चय ही शुद्ध होना चाहिए था। कोई भी याजक जो इन भेंटों को एक **अशुद्धता सहित** छूता उसे **यहोवा के सामने से ... नष्ट किया जाना था।** "नष्ट किया जाना" बहिष्कार या मृत्युदण्ड मिलने के जोखिम में होना था।[5]

भाषा उस प्रत्येक वस्तु पर लागू होने के लिए पर्याप्त व्यापक है जिसे एक याजक बलिदान प्रणाली के सम्बन्ध में करता था। इसी कारण, इसने अशुद्धता की दशा में एक याजक को बलिदान चढ़ाने से मना किया था।

इस सन्दर्भ में, जैसा कि अगली कुछ आयतें स्पष्ट करती हैं इस वाक्यांश का मुख्य बिंदु याजकीय भागों के खाने से सम्बन्धित है। याजक उस भोजन के स्रोत के विषय में लापरवाह हो सकते थे जो वे खाते थे। बलिदानों के साथ पवित्र वस्तु के समान व्यवहार करके, सम्भवतः वे मांस को घर पर लाकर उसके साथ ऐसा व्यवहार कर सकते थे मानो वह एक सामान्य मांस हो जो बाज़ार में से खरीदा गया था। इन निर्देशों ने व्याख्या की और बताया कि बलिदानों के मांस ने तब भी अपने पवित्र चरित्र को बनाए रखा जब उन्होंने इसे अपने परिवारों के साथ बांटा

था। उन्हें इस बात के लिए सावधान होना पड़ता था कि किसने उसे खाया था।

आयतें 4-7. इसके बाद यहोवा ने उन शर्तों की सूची दी जो एक याजक[6] को **अशुद्ध** करेंगी और इसी कारण उसे **पवित्र भेंटों में** भाग लेने के लिए अयोग्य बनाएंगी। यदि वह कोढ़ी था, यदि उसे **प्रमेह** हुआ था, या उसने एक **लोथ** को छूआ था, या उसका **वीर्य स्खलित** हुआ था, या उसने किसी अशुद्ध पशु को छूआ था। **(ऐसी कोई भी वस्तु जिसके द्वारा वह अशुद्ध हुआ था)** या एक **अशुद्ध** व्यक्ति (22:4, 5)।[7]

यदि एक याजक इनमें से किसी भी कारण से **अशुद्ध** हुआ था (और सम्भवतः किसी और अन्य कारण से), तो उसे उसके शुद्ध होने तक पवित्र वस्तुओं में से नहीं खाना था। शुद्ध होने के लिए, उसे **संध्या** तक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी, और इसके बाद **उसे स्नान करन पड़ता था (22:6)**। इन आवश्यकताओं को पूरा करने के बाद, **सूर्य अस्त** के समय उसे **शुद्ध** समझा जाएगा। इसके बाद वह फ़िर से इस्राएलियों के बलिदानों के याजकीय भागों में से **खाने** के योग्य बन जाएगा। वास्तव में **यहोवा** ने कहा कि याजक को उन भागों को खाने का अधिकार था, क्योंकि वे उसका **भोजन** थे।[8] बलिदानों का एक भाग याजकों का था और उसे उनके द्वारा खाया जाता था (22:7)।

आयत 8. ऐसे कई अवसरों से जब याजक को उसके लिए निर्धारित पवित्र भोजन को नहीं खाना था से लेकर शब्द का ध्यान जो वस्तुएं उसे **नहीं खानी चाहिए** उनकी ओर मुड़ता है। याजक को बताया गया था कि उसे **एक ऐसे पशु का मांस नहीं खाना था जो अपने आप मर गया था या जंगली जानवरों ने उसे फाड़ डाला था**, क्योंकि ऐसा करने के द्वारा वह अशुद्ध हो जाएगा (देखें 17:15, 16)। उसे के केवल वही पशु खाने थे जिन्हें उचित ढंग से वध किया गया था।

आयत 9. इसके बाद याजकों को उन निर्देशों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु जो उसने अभी-अभी दिए थे यहोवा ने (अन्य स्थानों के समान) एक उपदेश दिया। उसकी आवश्यकताओं का पालन करने के लिए दो कारण दिए गए हैं: (1) यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया तो, यह निहित था, कि उनकी अनाज्ञाकारिता के कारण वे अपने **पाप का बोझ** उठाएँगे और **मर जाएँगे** क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के **आदेश** को अपवित्र किया था। परमेश्वर के निर्देशों को अनदेखा करना या पालन न करना परमेश्वर के नाम को अपवित्र करने के समान प्रतीत होता है। (2) यदि उन्होंने आज्ञा का पालन किया, तो परमेश्वर उन्हें पवित्र करने - और जैसा वह पवित्र है उन्हें पवित्र बनाने के द्वारा इस्राएल के लिए अपने उद्देश्य को पूरा करेगा। बोलने के तरीके से, परमेश्वर ने यह कहने के द्वारा कि **"मैं यहोवा हूँ"** अपने हस्ताक्षर को इन प्रतिज्ञाओं के साथ चिपका दिया।

एक याजकीय परिवार से सम्बन्धित होना (22:10-16)

10"पराए कुल का जन किसी पवित्र वस्तु को न खाने पाए, चाहे वह याजक का अतिथि हो या मज़दूर हो, तौभी वह कोई पवित्र वस्तु न खाए। 11यदि याजक

किसी प्राणी को रुपया देकर मोल ले, तो वह प्राणी उसमें से खा सकता है; और जो याजक के घर में उत्पन्न हुए हों वे भी उसके भोजन में से खाएँ। 12यदि याजक की बेटी पराए कुल के किसी पुरुष से ब्याही गई हो, तो वह भेंट की हुई पवित्र वस्तुओं में से न खाए। 13यदि याजक की बेटी विधवा या त्यागी हुई हो, और उसकी सन्तान न हो, और वह अपनी बाल्यावस्था की रीति के अनुसार अपने पिता के घर में रहती हो, तो वह अपने पिता के भोजन में से खाए; पर पराए कुल का कोई उसमें से न खाने पाए। 14और यदि कोई मनुष्य किसी पवित्र वस्तु में से कुछ भूल से खा जाए, तो वह उसका पाँचवाँ भाग बढ़ाकर उसे याजक को भर दे। 15वे इस्राएलियों की पवित्र की हुई वस्तुओं को, जिन्हें वे यहोवा के लिये चढ़ाएँ, अपवित्र न करें। 16वे उनको अपनी पवित्र वस्तुओं में से खिलाकर उनसे अपराध का दोष न उठवाएँ; मैं उनका पवित्र करनेवाला यहोवा हूँ।"

विधियों का अगला समूह बलिदानों के याजकीय भागों को खाने के लिए एक अयोग्य याजक से इस ओर मुड़ता है कि उसके भोजन में सम्मिलित होने का अधिकार और किसे था।

आयत 10. यहोवा ने पहले यह टिप्पणी की और कहा कि *किसे* **पवित्र भागों में से खाने की** अनुमति नहीं थी। इस सामान्य नियम के अनुसार, किसी भी **साधारण व्यक्ति** को याजकों के लिए अलग किए गए मांस में से खाने की अनुमति नहीं थी। "साधारण व्यक्ति" में अनुवाद किए गए इब्रानी शब्द (זָר, *ज़ार)* का शाब्दिक अर्थ "परदेशी" है; इस सन्दर्भ में, शब्द किसी ऐसे व्यक्ति का उल्लेख करता है जो एक **याजक** नहीं था। इस श्रेणी में **परदेशी** (एक ऐसा व्यक्ति था जो याजक से भेंट करने के लिए आया था) या एक **मज़दूर** (कोई ऐसा जो आम तौर पर याजक के परिवार के लिए पैसे की खातिर काम करता था)। चूंकि लोग याजकीय परिवार का भाग नहीं थे, इसलिए उन्हें यहोवा की वेदी पर के पवित्र भोजन को खाने का अधिकार नहीं था।

आयत 11. यहोवा ने यह प्रकट किया कि *किसे* बलिदानों के याजकीय भागों को **खाने** अनुमति थी। मूल तौर पर, कोई भी ऐसा व्यक्ति जो याजकीय परिवार से सम्बन्धित था वह उस परिवार के लिए ठहराए गए बलिदानों में से खा सकता था। **एक याजक** के द्वारा मोल लिए गए **एक दास**[9] को जो उस परिवार में **जन्मे** थे उन्हीं के समान परिवार का एक भाग समझा जाता था। इन श्रेणियों में से किसी को भी **उसके भोजन** में भाग लेने अनुमति थी।

आयतें 12, 13. इसके बाद निर्देशों में एक विशेष मामला सम्मिलत हुआ: **एक याजक की पुत्री**। एक याजक का पुत्र जन्म से ही याजक बन जाता था और जीवन भर याजक रहता था। पवित्र **भेंटों** को जब परोसा जाता था तो इस बात का कोई प्रश्न ही नहीं था कि उसे इन्हें खाने का अधिकार था या नहीं। याजक की पुत्री भिन्न थी। वह याजक परिवार में जन्मी थी, परन्तु जब उसका **विवाह** हो जाता था तो उसके साथ क्या होता था? क्या उसे अब भी याजकीय भागों में से खाने की अनुमति मिलती थी?

ये विधियाँ निम्नलिखित परिस्थितियों पर विचार करते हुए इस प्रश्न का उत्तर देती हैं: (1) जब तक वह अविवाहित रहती और **अपने पिता के घर में रहती थी**, याजक की पुत्री परिवार का एक भाग थी और बलिदानों के भोजन को खा सकती थी। (2) यदि उसने एक **साधारण पुरुष** (कोई ऐसा जो याजक नहीं था) से विवाह किया था,[10] तो वह उसके गैर-याजकीय परिवार का भाग बन गई थी और उसे अब और अधिक याजकीय भागों में भाग लेने और खाने की अनुमति नहीं थी।[11] (3) यदि वह बाद में **विधवा** हो गई थी या उसका **तलाक** हो गया था और उसके कोई **सन्तान**[नें] नहीं थी,[12] वह अपने माता-पिता के साथ रहने के लिए अपने घर पर वापस लौट सकती थी। इस मामले में, वह फ़िर से पवित्र भेंटों में से खा सकती थी, क्योंकि वह, वास्तव में याजकीय परिवार से फ़िर जुड़ी थी।

आयत 14. इन नियमों को तोड़ने का दण्ड यहाँ पर दिया गया है। यदि कोई (**एक पुरुष**) जो योग्य नहीं था और उसने **अनजाने में** याजकों के लिए दी गई भेंटों में से कुछ खा ले, तो उसे अपनी त्रुटी की भरपाई जो कुछ उसने अनजाने में खाया था उसके बराबर मात्रा में देकर करनी पड़ती थी। इसके साथ ही, उसे अपनी त्रुटी के लिए 20 प्रतिशन (**पांचवां भाग**) जोड़ना पड़ता था। वाक्यांश यह स्पष्ट नहीं करता कि याजकीय परिवार से किसी व्यक्ति के *अनजाने* में याजकीय भाग को खाने में से क्या करना था; स्पष्ट तौर पर, वह एक धृष्ट और अपमानजनक पाप का दोषी ठहरा, और इसने उसे इस प्रकार का पाप करने के लिए दण्ड का भागी बना दिया।

आयतें 15, 16. 22:1-14 में संदेश एक उपदेश के साथ समाप्त होता है: **वे इस्राएल के पुत्रों की पवित्र भेंटों को जो वे यहोवा को चढ़ाते हैं अपवित्र न करें।** सर्वनाम "वे" उन याजकों का सन्दर्भ देता है जो बलिदान चढ़ाया करते थे। यदि याजक बलिदानों से सम्बन्धित नियमों को पूरा करने में असफल हुए, तो वे उन बलिदानों को "अपवित्र" कर देंगे - और उनसे पवित्र वस्तु के समान व्यवहार नहीं करेंगे, और "पवित्र भेंटों के प्रति सावधान" नहीं रहेंगे (22:2)। यह त्रुटी **उनकी पवित्र भेंटों को खाने के दोष के द्वारा उनके दण्ड उठाने का कारण होगी**।

आयत 16 में कठिन भाषा सम्मिलित है, हालांकि बात एकदम स्पष्ट है: यदि याजक अपना काम करने में विफल हुए तो, इस दोष के परिणाम स्वरूप वे दण्ड के योग्य होंगे। इस वाक्यांश का वैकल्पिक विवरण NRSV में मिलता है: "उनके लिए ऐसे अपराध का कारण बनता है जिसके लिए दोषबलि आवश्यक थी।" इसी के समान, NIV में यह अनुवाद है: "तो वह उनके ऊपर ऐसा अपराध ले आएगा जिसकी पूर्ती की आवश्यकता होगी।"[13] सर्वनाम "वे" उपवाक्य में उन लोगों पर लागू होता हुआ प्रतीत होता है जिन्होंने अनजाने में बलिदान का वह भोजन खा लिया था जो याजकों के लिए आरक्षित था। यदि उन्होंने ऐसा याजक की लापरवाही के कारण किया था, तो इसके दोषी पक्ष "अपने अपराध का भार उठाएंगे"; परन्तु याजक भी इसमें दोषी ठहरेगा। इसी कारण याजकों को उपदेश दिया गया था कि वे इस प्रकार की बातों को न होने दें।

इन निर्देशों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु एक अन्य कारण

यह भी दिया गया है, जैसा कि परमेश्वर ने कहा था, **“मैं उनका पवित्र करने वाला यहोवा हूँ।”** सर्वनाम “वे” किसका सन्दर्भ देता है? टिमोथी एम्. विलिस में यह टिप्पणी की “वे” याजकों को दिए गए बलिदानों के भागों, स्वयं याजकों और उन लोगों की ओर संकेत कर सकता है जिन्होंने बलिदानों को चढ़ाया था। उसने कहा, किसी भी मामले में, इस वाक्यांश का विषय यह है कि याजक, अपनी लापरवाही के कारण “यहोवा के पवित्र करने वाले कार्य को कम न आंके।” इसके साथ ही, उसने कहा यह उपवाक्य इस बात की पुष्टि करता है कि “यह यहोवा ही है जो पवित्र करता है, ताकि लोग यह न सोचें कि उनके अपने कार्य ... उन्हें पवित्र करते हैं।”[14]

बलिदानों के लिए एक आवश्यक बात: निर्दोष पशु (22:17-25)

17फ़िर यहोवा ने मूसा से कहा, 18हारून और उसके पुत्रों से और इस्राएलियों से समझाकर कह कि इस्राएल के घराने या इस्राएलियों में रहनेवाले परदेशियों में से कोई क्यों न हो जो मन्नत या स्वेच्छाबलि करने के लिये यहोवा को कोई होमबलि चढ़ाए, 19तो अपने निमित्त ग्रहणयोग्य ठहरने के लिये बैलों या भेड़ों या बकरियों में से निर्दोष नर चढ़ाया जाए। 20जिसमें कोई भी दोष हो उसे न चढ़ाना; क्योंकि वह तुम्हारे निमित्त ग्रहणयोग्य न ठहरेगा। 21और जो कोई बैलों या भेड़-बकरियों में से विशेष वस्तु संकल्प करने के लिये या स्वेच्छाबलि के लिये यहोवा को मेलबलि चढ़ाए, तो ग्रहण होने के लिये अवश्य है कि वह निर्दोष हो, उसमें कोई भी दोष न हो। 22जो अंधा या अंग का टूटा या लूला हो, अथवा उसमें रसौली या खौरा या खुजली हो, ऐसों को यहोवा के लिये न चढ़ाना, उनको वेदी पर यहोवा के लिये हव्य न चढ़ाना। 23जिस किसी बैल या भेड़ या बकरे का कोई अंग अधिक या कम बड़ा हो उसको स्वेच्छाबलि के लिये चढ़ा सकते हो, परन्तु मन्नत पूरी करने के लिये वह ग्रहण न होगा। 24जिसके अंड दबे या कुचले या टूटे या कट गए हों उसको यहोवा के लिये न चढ़ाना, और अपने देश में भी ऐसा काम न करना। 25इनमें से किसी को तुम अपने परमेश्वर का भोजन जानकर किसी परदेशी से लेकर न चढ़ाओ; क्योंकि उनमें उनका बिगाड़ वर्तमान है, उनमें दोष है, इसलिये वे तुम्हारे निमित्त ग्रहण न होंगे।

यहोवा इस विचार से हटकर कि कौन (और कौन नहीं) उन बलिदानों का उपभोग करेगा इस विषय की ओर मुड़ा कि इस्राएलियों को भेंटों के रूप में क्या लेकर आना था।

आयतें 17-19. इन नियमों का प्रत्येक इस्राएली के द्वारा समझा जाना आवश्यक था, क्योंकि जो लोग याजकों के पास वेदी पर भेंट चढ़ाने के लिए बलिदान लेकर आया करते थे वे साधारण लोग थे। इसी कारण, **यहोवा ने** उन श्रोताओं को इन आयतों में विस्तृत कर दिया जिन्हें वह सम्बोधित कर रहा था। उसके संदेश की मंशा केवल **हारून** और **उसके पुत्रों** के लिए ही नहीं थी बल्कि

इस्राएल के सभी पुत्रों के लिए भी थी। फ़िर भी, ये निर्देश विशेष तौर पर याजकों के लिए महत्वपूर्ण हैं; क्योंकि यह उनकी ज़िम्मेदारी थी कि वे यह सुनिश्चित करने पवित्र स्थान की वेदी में चढ़ाई जाने वाली प्रत्येक वस्तु यहोवा को प्रसन्न करे। वे याजक ही थे जिन्होंने इस भाग में दी गई विधियों को लागू किया।

यहोवा ने एक सामान्य सिद्धांत कहने के द्वारा आरम्भ किया: इस्राएल के घराने या इस्राएलियों में रहनेवाले परदेशियों[15] में से कोई क्यों न हो जो मन्नत या स्वेच्छाबलि करने के लिये यहोवा को कोई **होमबलि चढ़ाए, तो अपने निमित्त ग्रहणयोग्य ठहरने के लिये बैलों या भेड़ों या बकरियों में से निर्दोष नर चढ़ाया जाए।** यह वेदी पर जलाई जाने वाली किसी भी वस्तु के लिए सत्य था,[16] चाहे बलिदान की मंशा **मन्नत बलि** या एक **स्वेच्छा** बलि क्यों न हो।[17]

आयतें 20, 21. हाल में ही प्रस्तुत किए गए सिद्धांत पर, परमेश्वर ने बलपूर्वक यह कहा कि कोई वस्तु जिसमें दोष हो वह चढ़ाने के लिए अयोग्य ठहरेगी। इसके बाद उसने इस नियम को दोहराया: यदि कोई **मेलबलि** चढ़ाए, **गाय-बैल या भेड़-बकरियों** में से कोई भी क्यों न हो, उसके द्वारा इस भेंट को स्वीकार किए जाने के लिए उसका **सम्पूर्ण** होना आवश्यक था (जिसका अर्थ है पूर्ण या सम्पूर्ण)। यह मामला तब भी था जब चाहे मेलबलि एक **स्वेच्छा बलि** थी या वह एक मन्नत थी। वाक्यांश **एक विशेष संकल्प पूरा करने के लिए** को "एक विशेष मन्नत बलि चढ़ाने" में भी अनुवादित किया जा सकता है।

आयतें 22-24. सामान्य सिद्धांत को बताने के बाद, व्यवस्था उन दोषों के उदाहरण देने की ओर आगे बढ़ती है जिनसे एक पशु यहोवा को बलि के रूप में चढ़ाए जाने के लिए अयोग्य ठहरेगा। आठ दोष या कमियों कि सूची दी गई है:[18] **अंधा** होना **या अंग का टूटा या लूला** होना, **अथवा उसमें रसौली या खौरा या खुजली** होना, **कोई अंग अधिक या कम बड़ा** होना **जिसके अंड दबे या कुचले या टूटे या कट गए हों**।[19] यदि किसी पशु में इनमें से कोई भी दोष होता तो, तो **उसे वेदी पर होमबलि के यहोवा के सामने न लाया जाए** (22:22), और उसे **तुम्हारे देश** के अंदर भी बलि न किया जाए (22:24) - जो कि, वह देश था जिसकी ओर इस्राएल यात्रा कर रहा था, प्रतिज्ञा का देश।

आयत 23 ऐसी बात प्रस्तुत करती है जो इस बात में छूट के समान दिखाई पड़ती है कि एक दोष सहित पशु को कभी भी एक बलिदान के रूप में नहीं चढ़ाया जा सकता था "जिसका कोई अंग अधिक या कम हो" उसे मन्नत बलि के रूप में ग्रहण नहीं किया जाएगा, एक ऐसी भेंट जो उस मन्नत से सम्बन्धित थी जिसे आराधक ने लिया था। हालांकि, उसे **स्वेच्छा बलि** के रूप में स्वीकार किया गया। यह आयत उन पशुओं की चर्चा कर रही है जिनमें एक प्रकार का जन्मजात दोष था, किसी अन्य प्रकार के अधिक या कम अंग किन्ही अन्य दोषों के विषय में शब्द में बात नहीं की गई है। फ़िर भी, नियम यह संकेत करता है कि यहोवा ने मन्नत बलियों का स्थान स्वेच्छा बलियों से अधिक ऊँचा रखा था।

सूचीबद्ध दोष 21:18-20 के समानान्तर हैं, जिन्होंने एक याजक को निवासस्थान में सेवा करने से अयोग्य घोषित किया था। संदेश यह है परमेश्वर

नहीं चाहता था कि अपूर्ण याजक अपूर्ण पशुओं को उसकी वेदी पर बलि चढ़ाएं। परमेश्वर की पवित्रता के कारण यह आवश्यक था कि जो उसकी सेवा करते हैं वे दोष-रहित हों और निर्दोष पशुओं को उसके लिए बलि करें।

आयत 25. यह भाग इस्राएलियों के लिए एक चेतावनी के साथ समाप्त होता है कि वे दोषरहित पशुओं को न खरीदें जैसा वर्णन किया गया है **एक परदेशी** के हाथ से **तुम्हारे परमेश्वर के भोजन के रूप में** वेदी पर चढ़ाने के उद्देश्य के साथ। इसका जो कारण दिया गया है वह यह है कि दोष वाले पशु दूषित थे, और उन्हें यहोवा के लिए बलि के रूप में **स्वीकार न** किया जाए। वह "भोजन" जो इस्राएल परमेश्वर को चढ़ाता था उसका उच्च गुणवत्ता का होना आवश्यकत था; कोई भी दोषपूर्ण वस्तु स्वीकार्य नहीं थी, चाहे उसका कोई भी स्रोत क्यों न हो।

बलिदानों से सम्बन्धित अतिरिक्त आवश्यक बातें (22:26-30)

नियमों के दो समूह याजकों और लोगों के लिए याजकों के द्वारा संचालित बलिदानों हेतु निर्देश तय करते हैं।

एक अत्यधिक कम आयु के पशु को बलि किए जाने के सम्बन्ध में निषेध (22:26-28)

[26]फ़िर यहोवा ने मूसा से कहा, [27]"जब बछड़ा या भेड़ या बकरी का बच्चा उत्पन्न हो, तो वह सात दिन तक अपनी माँ के साथ रहे; फ़िर आठवें दिन से आगे को वह यहोवा के हव्य के लिये ग्रहणयोग्य ठहरेगा। [28]चाहे गाय, चाहे भेड़ी या बकरी हो, उसको और उसके बच्चे को एक ही दिन में बलि न करना।"

आयतें 26-28. यह वर्णन करने के बाद कि जो शब्द आगे आते हैं वे **यहोवा** की ओर से आते हैं (22:26), ये नियम तय करते हैं कि एक पशु **एक बलिदान के रूप में स्वीकार किए जाने के लिए** कम से कम आठ दिन का होना आवश्यक था। उसे **सात दिन तक अपनी माता के साथ** (शाब्दिक तौर पर, "नीचे") रहना पड़ता था (22:27; देखें निर्गमन 22:30)। इसके बाद, उसे **यहोवा के लिए एक होमबलि के रूप** में उपयोग किया जा सकता था। आयत 28 एक और निषेध जोड़ती है: पशुओं के बच्चों और उनकी माताओं को **एक ही दिन** नहीं मारा जा सकता था।

ये विधियाँ एकदम सीधी है और आसानी से समझ में आती हैं। हालांकि, इन्हें क्यों दिया गया था, यह प्रश्नों को उत्पन्न करता है। इसकी कई व्याख्याएँ सम्भव हैं। मार्टिन नोथ ने सुझाव दिया,

> ये हो सकता है कि यह नियम [आयत 27 में] और आयत 28 में निर्देश एक रीति के लिए मना करते हैं, जो आमतौर पर एक पशु और उसके बच्चे को एक ही समय पर बलि करने के विदेशी पंथो में थीं। सम्भवतः ये इस्राएल के चारों और पंथों के संसार में प्रख्यात प्रजनन संस्कारों के लिए एक प्रतिबंध का प्रश्न हो सकता है।[20]

एलन पी. रोस ने प्रस्ताव दिया कि "यह सुनिश्चित करने के लिए वह एक जीवित परमेश्वर था और उसके मानवतावादी उद्देश्य थे" एक अत्यधिक कम आयु के पशु को बलि चढ़ाने के विरुद्ध एक नियम की आवश्यकता थी। उन्होंने ये भी कहा कि एक पशु और उसकी माँ एक ही दिन बलि किए जाने के निषेध की मंशा सम्भवतः "गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के झुण्ड के रिक्तिकरण से बचाने के लिए थी जो परमेश्वर की सृष्टि के एक भाग के विनाश का कारण हो सकता है।"[21]

धन्यवाद बलि के खाने से सम्बन्धित एक नियम (22:29, 30)

29"और जब तुम यहोवा के लिये धन्यवाद का मेलबलि चढ़ाओ, तो उसे इसी प्रकार से करना जिससे वह ग्रहणयोग्य ठहरे। 30वह उसी दिन खाया जाए, उसमें से कुछ भी सबेरे तक रहने न पाए; मैं यहोवा हूँ।"

आयतें 29, 30. इस अध्याय में बलिदानों से सम्बन्धित अन्तिम बात **धन्यवाद के बलिदान** चढ़ाने से सम्बन्धित है। नियम पहले इस्राएल को शिक्षा देता है कि इन बलिदानों को इस प्रकार से चढ़ाया जाए जिससे ये **यहोवा को स्वीकार्य हों**। अन्य शब्दों में, लोगों को इन बलिदानों के विषय में पहले ही दिए जा चुके नियमों का अनुसरण करना था। यदि उन्होंने ऐसा किया, तो परमेश्वर उनके बलिदानों को ग्रहण करेगा और उन्हें चढ़ाने वालों को भी ग्रहण करेगा।

इसके बाद यहोवा ने 7:15 में दिए गए एक नियम को दोहराया: बलिदान के जिस भाग को लोगों के द्वारा **खाया** जाना था, उसे **उसी दिन खा जाना था** जिस दिन चढ़ाया गया था। इसमें से कुछ भी बलिदान चढ़ाने के अगले दिन की **सुबह तक बाकि नहीं** छोड़ा जा सकता था। एक सचित्र में रूप में कहें तो, परमेश्वर ने यह कहने के द्वारा कि **"मैं यहोवा हूँ"** इस नियम पर हस्ताक्षर कर दिए थे। उसकी स्वीकृति के इस चिन्ह् के विषय में उसकी मंशा केवल इस एक नियम को तय करने के लिए नहीं थी, बल्कि अध्याय 21 में आरम्भ होने वाले (और इससे भी पहले) और यहाँ समाप्त होने वाले नियमों के समस्त समूह के प्रति थी।

उपसंहार (22:31-33)

31"इसलिये तुम मेरी आज्ञाओं को मानना और उनका पालन करना; मैं यहोवा हूँ। 32और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र न ठहराना, क्योंकि मैं इस्राएलियों के बीच अवश्य ही पवित्र माना जाऊँगा; क्योंकि मैं तुम्हारा पवित्र करनेवाला यहोवा हूँ, 33जो तुम को मिस्र देश से निकाल लाया, जिससे तुम्हारा परमेश्वर बना रहूँ; मैं यहोवा हूँ।"

अध्याय 22, और वह भाग जो 21:1 के साथ आरम्भ हुआ था, एक उपदेश के साथ समाप्त होता है।

आयतें 31-33. यह अन्तिम उपदेश, अन्य के साथ (18:1-5; 24-30; 19:37;

20:7, 8, 22-26), अध्याय 18 से लेकर 22 को एक साथ "विषय इकाई" के रूप में बांधते हुए प्रतीत होता है। यह इकाई "समस्त इस्राएल, याजकों और उनके जैसे समाज के, अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र - विधियों, नीति सम्बन्धी, सामजिक और नैतिक में पवित्र बनने के द्वारा परमेश्वर का चित्र [प्रतिबिम्ब] बनने" की आज्ञा के चारों ओर घूमती है।[22] इस उपदेश ने परमेश्वर के लोगों के लिए यह स्पष्ट किया कि *क्या* करना है और *क्यों* करना है।

उन्हें क्या करना था? **देश** को परमेश्वर की **आज्ञाओं का पालन करना था** (22:31)। इस अध्याय में सभी नियम, और जो इससे पहले थे, वे सुझावों की श्रृंखला में नहीं थे, बल्कि आज्ञाएँ थे। लोगों को वे बातें सुननी थी और उनका पालन करना था जो परमेश्वर ने कहीं थीं।

उन्हें इन बातों को क्यों करना था? (1) इस्राएल को यह इसलिए करने के लिए कहा गया था क्यों **यहोवा परमेश्वर है** (22:31)। उसके पास अपने लोगों को आज्ञा देने का अधिकार है। जब उसने इस्राएलियों को एक आज्ञा दी, तो इसका पालन करने की ज़िम्मेदारी उनकी थी। (2) उन्हें परमेश्वर की पवित्रता के कारण उन आज्ञाओं का पालन करना था। परमेश्वर की मंशा - **पवित्रता में** - और एक परम पवित्र परमेश्वर के रूप में स्वीकारे जाने की थी। परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में विफल होना उसके **पवित्र नाम** को **अपवित्र** करना था, जो नहीं किया जाना चाहिए (22:32)। (3) इस्राएल को परमेश्वर की आज्ञा का पालन इसलिए करना था क्योंकि अपने लोगों को पवित्र बनाना चाहता था। उसने इस्राएल को मिस्र से छुड़ाया था और उस देश के साथ वाचा बाँधी थी (22:32, 33)। वाचा का उनका भाग उसकी आज्ञाओं का पालन करना था - एक ऐसी ज़िम्मेदारी जिसे उन्होंने इसके देने के समय हर्ष से और स्वेच्छा से स्वीकार किया था (निर्गमन 19)। वाचा के अनुसार, परमेश्वर अपने लोगों को एक पवित्र देश बनाएगा।[23] अब यह आवश्यक था कि, यदि परमेश्वर इस्राएल को एक पवित्र देश बनाने के अपने लक्ष्य को पूरा करे, तो उसके लोगों को अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार जीना था और जो आज्ञाएँ उसने दी थीं उन सभी का पालन करना था।

अनुप्रयोग

याजकों के लिए आरक्षित सौभाग्य (अध्याय 22)

लैव्यव्यवस्था 22 इस बात को स्पष्ट करता है कि केवल याजकों और उनके परिवारों को ही "पवित्र भेंटों" में से खाने का सौभाग्य प्राप्त था, वे याजकीय भाग जो इस्राएलियों के द्वारा यहोवा के लिए लाए गए थे। नए नियम के समय में, सभी मसीही याजक हैं (1 पतरस 2:5, 9)। याजकों के रूप में हमारे पास कुछ ऐसी विशिष्टताएं हैं जो अन्य लोगों के लिए उपलब्ध नहीं हैं। जैसा कि "याजक" शब्द संकेत करता हमारे पास परमेश्वर के पास (यीशु के माध्यम से, महायाजक और मनुष्य और परमेश्वर के बीच मध्यस्थ) जाने का सौभाग्य है। हमारे पास पिता के लिए आत्मिक बलिदान चढ़ाने का अधिक और ज़िम्मेदारी भी है (रो. 12:1, 2;

इब्रा. 13:15, 16)।

याजकों के बलिदानों में से खाने का अधिकार किस प्रकार से मसीही युग समानान्तर है? सम्भवतः बलिदानों में से खाना फ़िर यीशु मसीह में भागी होने के समान है, जो अब सिद्ध बलिदान है। जब हम मसीह के शिष्यों के रूप में उसके पास आते हैं, और स्वयं को उसके संसार और तरीकों में डुबोते हैं, उसका चरित्र पहन लेते हैं, स्वयं को उसकी इच्छा के अधीन करते हैं, और उसकी हर एक वस्तु से प्रेम करते हैं जो हमारे पास है - तब हम वह जीवन जल पीते हैं जो वह देता है (यूहन्ना 4:10) और वह जीवन की रोटी में से खाते हैं जो उसकी देह है (यूहन्ना 6:35)। पुराने समय के याजकों के समान, हम उस बलिदान में भाग लेते हैं जो हमारे लिए चढ़ाया गया था ।

सम्भवतः अब यह कहा जा सकता है, अब उस समय के समान, केवल "याजकों" (मसीहियों) के पास ही यह सौभाग्य है। कोई भी यीशु मसीह के विषय में और मसीह की सराहना करके इसका लाभ उठा सकता है। हालांकि, कोई भी वास्तव में मसीह का "मांस नही खा सकता" और "लहू नहीं पी सकता" (यूहन्ना 6:53-56), और मसीह के साथ सम्पूर्ण तौर पर जुड़ने की आशीष का अनुभव एक मसीही बने बिना नहीं कर सकता।

आज कुछ सौभाग्य केवल "याजकों" के लिए आरक्षित हैं। अच्छा समाचार ये है कि हमें याजक बनने के लिए किसी विशेष सांसारिक परिवार में जन्म लेने की आवश्यकता नहीं है। हमें केवल इतना करना है कि हमें परमेश्वर के परिवार (यूहन्ना 3:3, 5) में नया जन्म लेना है।

समाप्ति नोट्स

[1]उदाहरण के लिए देखें, लैव्यव्यवस्था 6 और 7। क्लाईड एम. वुड्स और जस्टिन एम. रॉजर्स के अनुसार, "[गिनती] 18:8 याजकीय भागों को अच्छे प्रकार से सारांशित करता है" (क्लाइड एम. वुड्स एण्ड जस्टिन एम. रॉजर्स, *लैव्यव्यवस्था - गिनती*, द कॉलेज प्रेस NIV कमेंट्री [जोप्लिन, एमओ.: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कम्पनी 2006], 132)। [2]उदाहरण के लिए, अन्य संस्करणों में "सावधानी से व्यवहार करें" (NRSV); "इनसे व्यवहार करने में ईमानदार रहें" (REB); और "सम्मान के साथ व्यवहार करें" (NIV) हैं। [3]आर. लेयर्ड हैरिस, "लैव्यव्यवस्था," इन *द इक्स्पॉज़िटर्स बाइबल कमेंट्री*, वॉल्यूम 2, *उत्पत्ति - गिनती*, एड. फ्रैंक ई. गैब्लिन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन पब्लिशिंग हाउस, 1990), 618. हैरिस साईटेड विलियम एल. होलाड़े, *अ कन्साइज़ हीब्रू एण्ड अरेमिक लेक्सिकॉन ऑफ़ द ओल्ड टेस्टमेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1971), 232. [4]"पहुँच" की बजाए अन्य संस्करणों में "जो पवित्र भेटों के निकट आते हैं" (NIV); "पवित्र भेटों के निकट जाते हैं" (NKJV); और "पवित्र वस्तुओं के निकट आते हैं" (NRSV) हैं। [5]डब्ल्यू. एच. बेलिंगर, ने कहा कि परमेश्वर की उपस्थिति होने से "नाश किया जाना" "एक प्रकार का ईश्वरीय दण्ड था।" अन्य शब्दों में, परमेश्वर तब किसी को दण्ड देता था जब वे यहोवा की उपस्थिति होने से "नष्ट" हो जाते थे। (डब्ल्यू एच. बेलिंगर, जूनियर, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमेंट्री [पीबॉडी, मेसाचुसेट्स.: हेंड्रिकसन पब्लिशर्स, 2001], 131.) [6]22:4 का पहला भाग यह संकेत करता है कि यहोवा याजकों के विषय में बात कर रहा था। जो आयतें इसके बाद आती हैं उनमें, जब "मनुष्य" शब्द का उपयोग किया गया है, तो पाठक यह सोच सकता

है कि इसका अर्थ "एक मनुष्य जो याजक है" से है। [7]सम्भवतः, इन आयतों में सूचीबद्ध किए गए विशिष्ट मामलों की मंशा एक प्रतिरूप बनने की थी। यह विचार संकेत करता है कि जो वस्तु एक मनुष्य को अशुद्ध करेगी वही एक याजक को "पवित्र भेंटों" में से खाने हेतु अयोग्य बनाएगी। अशुद्धता के सम्बन्ध में, देखें लैव्यव्यवस्था 11-15. [8]पद 22:7 में, "उसका भोजन" शाब्दिक तौर पर "उसकी रोटी" है। "रोटी" के लिए इब्रानी शब्द לֶחֶם *(लेकेम)* है। [9]"दास" इस वाक्यांश में शाब्दिक तौर पर "आत्मा" (נֶפֶשׁ, *नेपेश)* है। KJV "आत्मा," और NKJV इसका अनुवाद "व्यक्ति" में करता है। [10]यदि उसने एक याजक से विवाह किया था तो वह उसके परिवार का एक भाग बन गई और पवित्र उपहारों में से खाने का उसका अधिकार बना रहा। हालांकि, यदि उसने एक याजक से विवाह किया था, तो उसने एक कुटुम्बी से विवाह किया, क्योंकि सभी याजक (और उनकी पुत्रियाँ) हारून के वंशज थे।

[11]शब्द कहता है, "वह भेंट की वस्तुओं में से कुछ न खाए।" "भेंट" (תְּרוּמָה, *थेरुमाह)* शाब्दिक तौर पर "उठाने की भेंट" है। बलिदान का जो भाग "उठाया" गया था वह याजकीय भाग था। [12]यदि वह विधवा या तलाकशुदा थी और उसके पास बच्चे थे, तो उसकी परिस्थिति और भी जटिल हो गई। बच्चे उसके परिवार से सम्बन्ध रखेंगे और "एक साधारण व्यक्ति" होंगे और इसी कारण उन्हें याजकों और उनके परिवारों के लिए आरक्षित विशेष भोजन में से खाने की अनुमति नहीं होगी। [13]CEV 22:15, 16 का अनुवाद इस प्रकार करती है, "मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि इस्राएल के लोगों के द्वारा लाई गई भेंटों के साथ अनुचित व्यवहार न करना। उन्हें इस पवित्र भोजन के खाने का दोषी न बनने देना। स्मरण रखना - मैं यहोवा हूँ, जो इन भेंटों का पवित्र करने वाला है।" [14]टिमोथी एम्. विलिस, *लैव्यव्यवस्था,* एबिंगडन ओल्ड टेस्टमेंट कमेंट्रीज (नैशविल: एबिंगडन प्रेस, 2009), 186. [15]"परदेशी" या गैर-इस्राएलियों का इस्राएलियों के मध्य में रहने के लिए स्वागत था। यदि उन्होंने ऐसा किया, तो वे उस व्यवस्था को मानने के लिए बाध्य थे जो इस्राएल को दी गई थी। इस्राएल की धार्मिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए भी उन्हें अनुमति थी - उदाहरण के लिए, बलिदान चढ़ाने के द्वारा। इसके अलावा, यदि उन्होंने ऐसा किया, तो उनका उन्हें उन नियमों का पालन करना आवश्यक था जिनका पालन इस्राएली किया करते थे। ये "निवासी परदेशी" धर्मांतरण करने वालों के समान नहीं थे। जब कोई धर्मांतरण करता था, तो उसे और अधिक परदेशी नहीं समझा जाता था, बल्कि उसे इस्राएली समझा जाता था। [16]स्पष्ट तौर पर, अन्य प्रकार की भेंटें - उदहारण के तौर पर, पक्षियों की - 22:17-25 के नियमों के अधीन नहीं आती थी। [17]अनुच्छेद इस बात को स्पष्ट करता है कि इस अनुच्छेद में जिस प्रकार की बलियों पर विचार किया जा रहा है वे "मेल बलियां" थीं (22:21), जिनके तीन प्रकार हैं: धन्यवाद बलि, मन्नत बलि, या स्वेच्छा बलि। याजकों को मुख्य तौर पर अपने भाग इस प्रकार की बलियों से ही प्राप्त होते थे; और इन बलियों से उपलब्ध किए गए भाग उस इनाम का एक भाग होते थे जो याजकों को उनके कार्यों के लिए दिए जाते थे। अलग नियमों में अन्य प्रकार के बलिदानों का विधियाँ दीं: होमबालियाँ, पापबलियाँ, दोषबलियाँ, और अन्न बलियाँ। [18]इस अध्याय में मिलने वाले पशुओं के दोषों की सूची और अध्याय 21 में याजकों को सेवा करने से अयोग्य घोषित करने वाले दोषों की सूची के बीच समानताएं देखी जा सकती हैं। आर. के. हैरिसन ने कहा, "उन शारीरिक अक्षमताओं की सूची जिसने पवित्रस्थान में सेवा करने से हारून के वंशजों को अयोग्य घोषित किया उसे बलि पशुओं पर लागू किया गया है [22:22, 24]" (आर. के. हैरिसन, *लैव्यव्यवस्था,* द टिंडेल ओल्ड टेस्टमेंट कमेंट्रीज़ [डाउनर्स ग्रोव, इलिनोई.: इंटर-वर्सीटी प्रेस, 1980], 213).[19]आयत 24 में, "उसके अंड सहित" NASB में इटैलिक्स में लिखा गया, जो संकेत करता है कि ये शब्द इब्रानी शब्द में नहीं पाए जाते। इन्हें अनुवादकों द्वारा वाक्यांश को पाठक के लिए और अधिक स्पष्ट बनाने के लिए किया गया है। अधिकांश अंग्रेज़ी अनुवाद "अंड" शब्द को सम्मलित करते हैं। इस नियम ने यहोवा को किसी ऐसे पशु को चढ़ान वर्जित किया जिसके अंड निकाल लिए गए थे। [20]मार्टिन नोथ, *लैव्यव्यवस्था,* रिवाइज़्ड एडिशन, ओल्ड टेस्टमेंट लाइब्रेरी (लन्दन: एससीएम प्रेस, 1977), 163.

[21]एलन पी. रोस, *होलीनेस टू द लार्ड: ए गाइड टू द एक्सपोजिशन ऑफ़ द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर अकेडमिक, 2002), 393-94. एक अन्य स्रोत ने कहा

कि बाद के इस नियम ने "थोड़े से पशुओं वाले लोगों को सुरक्षा प्रदान की जिन्हें अन्यथा रीति आवश्यकताओं के कारण अपने छोटे से पशुओं के झुण्ड को नाश होने की स्थिति में पाया" (जॉन एच. वाल्टन, विक्टर एच. मैथ्यूज़, एण्ड मार्क डब्ल्यू. चावालास, *द आईवीपी बाइबल बैकग्राउंड कमेंट्री - ओल्ड टेस्टमेंट* [डाउनर्स ग्रोव, इलिनोई: इन्टरवर्सिटी प्रेस, 2000], 137)। टिप्पणीकार इन निर्देशों और व्यवस्थाविवरण 22:6 में पाए जाने वाले निर्देशों में समानान्तरता पाते हैं, जो एक पक्षी को उसके बच्चे के साथ मारने से रोकती है, और उन अनुच्छेदों के बीच में भी जिन्होंने इस्राएलियों को एक बच्चे को उसकी माता के दूध में पकाने से मना किया था (निर्गमन 23:19, 34:26; व्यव. 14:21)।

[22]सैमुएल ई. बैलेंटाइन, *लैव्यव्यवस्था,* इंटरप्रिटेशन (लुइविल: जॉन नोक्स प्रेस, 2002), 171.

[23]बैलेंटाइन ने लिखा, "यह वाक्यांश 'मैं तुझे पवित्र करता हूँ' (आयत 32) ... परमेश्वर अंत में पवित्र लोगों की बुलाहट को असफल होने की अनुमति नहीं देगा। सात घटनाओं के सातवीं में (20:8; 21:8, 15; 21:23; 22:9, 16, 32), शब्द मैं तुम्हें पवित्र करता हूँ" इस्राएल के मध्य में परमेश्वर की अविश्वसनीय प्रतिबद्धता के काम करने, उनकी आज्ञाकारिता में उन्हें पवित्र करने, उनकी असफलताओं को क्षमा करने, और उन्हें नई सम्भावनाओं के लिए पुनःस्थापित करने और उस पवित्रता को प्राप्त करने के लिए जो परमेश्वर के लिए आवश्यक है उसका पूरा दृश्य देता है (उपरोक्त., 172)।